रिकार्ड– ना वो हमसे जुदा..... ओमशांति प्रातःक्लास 7–5–67
अब यह है बेहद की बातें। हद की बातें सब निकल जाती हैं। वहां अनेकों को याद किया जाता है। अनेक देहधारी साथ प्रीत रहती है। विदेही एक ही है जिनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। अब उनके साथ ही बुद्धियोग लगाना है। कोई देहधारी को याद नहीं करना है। ब्राह्मण आदि खिलाना यह हो गया भक्तिमार्ग की रस्म–रिवाज। वहां के रस्म–रिवाज और यहां के रस्म–रिवाज बिल्कुल अलग हैं। यहां कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। जब तक वो अवस्था आवे तब तक चलता रहता है। बाप कहते हैं जितना हो सके पुरानी दुनियां के जो होकर गये हैं वो जो हैं सबको भूल जाओ। सारी दिन बुद्धि में यही चले कि किसको क्या समझाना है। आकर वर्ल्ड के पास्ट ,प्रेजेन्ट, फ्यूचर को समझो। जिसको कोई भी नहीं जानते हैं। पास्ट अर्थात् कब से यह शुरू हुआ। प्रेजेन्ट अब क्या है?शुरू हुआ है सतयुग से। तो सतयुग से लेकर अब तक फ्यूचर क्या होना है यह दुनियां नहीं जानती है। तुम बच्चे जानते हो,मानते हो। इसलिए ही चित्र आदि बनाते हो। यह है बड़ा बेहद का नाटक। वो छोटे हद के नाटक तो बहुत बनाते हैं। स्टोरी बनाने वाले अलग होते हैं और नाटक की सीन–सीनरियां बनाने वाले अलग होते हैं। अब इस बेहद के ड्रामा की स्टोरी तो तुम जानते हो। बाकी नई दुनियां की सीन–सीनरी क्या होती है। कैसे सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजधानी चलती है। अनेक धर्म विनाश होकर एक आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना होती है। यह सारा राज अभी तुम्हारी बुद्धि में है। अभी जो कुछ देखते हो वो नहीं रहेगा। विनाश हो जावेगा तो तुम सतयुग के सीन–सीनरियां बहुत अच्छे2 दिखाने पड़े। जैसे अजमेर में भी .....है। उसमें से भी सीन–सीनरियां लेकर नई दुनियां अलग, फिर तुम दिखाओ कि इस पुरानी दुनियां को आग लगनी है। इनका भी नशा तो है ना। और यह नई दुनियां इमर्ज हो रही है। रावण की दुनियां को आग लग रही है और बाजू में विश्व की राजधानी स्थापन हो रही है। ऐसे2 खयालात कर अच्छी रीति बनाना चाहिए। यह तो तुम समझते हो कि इस समय मनुष्यों की है बिल्कुल ही जैसे कि ऐप बुद्धि। कितना तुम समझाते हो तब भी कोई की बुद्धि में बैठता नहीं है। तो वो जो नाटक वाले सीन–सीनरी बनाते हैं कोई से मदद लेकर सतयुग की सीन–सीनरी बहुत अच्छी बनानी चाहिए। वो लोग से आइडिया मिलेगी। युक्ति बतावेंगे। बाबा को समाचार आया था। वो लोग तब बहुत लेते हैं। फिर भी समझ कर ऐसा अच्छा बनाना चाहिए जिससे कि वो लोग समझें कि .....सतयुग में एक धर्म था। तुम बच्चों में भी नम्बरवार हैं जिनकी धारणा रहती है। देहअभिमानी बुद्धि को छी2 कहा जाता है। देही अभिमानी को गुल–गुल कहा जाता है। अभी तुम फूल बनते हो। देहअभिमान रहने से कांटे के ही कांटे रहते हैं। तुम बच्चों को तो इस पुरानी दुनियां से वैराग करना है। तुम्हारी है बेहद की बुद्धि और वैराग। हमको इस वैश्यालय से बड़ी नफरत है। अभी हम शिवालय में जाने लिए फूल बन रहे हैं। बनते2 भी अगर फिर कोई खराब काम चलने चलते हैं तो उनसे बहुत नफरत आती है। समझा जाता है कि इनमें भूत की प्रवेशता है। एक ही घर में पति हंस बन रहा है ,पति बगुला है तो डिफिकल्टी होती है। सहन करना पड़ता है। समझा जाता है कि इनकी तकदीर में नहीं है। सभी तो दैवी कुल के बनने वाले नहीं हैं ना। जो बनने वाले होंगे वो ही बनेंगे। बहुतों की खराब चलन की रिपोर्ट्स आती है, इसमें यह आसुरी गुण है। इसलिए ही बाबा रोज समझाते हैं कि अपना पोतामेल रोज लिखो। देखो कि आज हमने दिन भर में कोई आसुरी काम तो नहीं किया?यहां भी रोज कचहरी करनी होगी। बाबा जानते हैं सच्च नहीं बतावेंगे। समझते नहीं हैं। बाबा कहते हैं सारे जीवन में जो भूल की है वो बताओ। कोई गंदा काम करते हैं तो गर्भवती हो जाती है तो वो बात सर्जन को बताने में लज्जा आती है ;क्योंकि इज्जत जावेगी ना। ना बताने से फिर नुकसान हो जावे। आजकल तो बहुत गंदे होकर फिर सफाई करवा देते हैं। डाक्टरों के पास ऐसे बहुत केस आते हैं। यहां भी माया ऐसा थप्पड़

मारती है जो कि एकदम सत्यानाश कर देती है। सेन्टर्स की ब्राह्मणियां भी ऐसी गंदी बन जाती है। माया बड़ी जबरदस्त है। पांच विकारों पर जीत पा नहीं सकते हैं तो पाप भी क्या करेंगे?भल गवर्मेंट पास केस चला जावे और वो पूछे तो कहेंगे भल केस कर जेल में डाल दो। और क्या करेंगे?क्योंकि बाप कहते हैं कि मैं रहमदिल भी हूँ। तो कालों का काल भी हूँ। मुझे बुलाते ही हैं कि हे पतित–पावन आकर मुझे पतित से पावन बनाओ। मेरे नाम तो .....हैं ना। कैसे रहमदिल भी हूँ और कालों का काल भी हूँ वो पार्ट अब बज रहा है। कांटों को फूल बनाते हैं। तुम्हारी बुद्धि में वो खुशी है। अब अमरनाथ पर जाकर भी सर्विस करने लिए प्रोग्राम बना रहे हैं। कहते हैं अमरनाथ ने पार्वती को अमरकथा सुनाकर अमर बनाया। फिर वो कहां गये किसी को पता थोड़े ही पड़ता है। अब बच्चे वहां प्रदर्शनी कर रहे हैं तो इस पर वहां वो समझावेंगे। चित्र छपवाने पड़ेंगे कि यह अमरनाथ की यात्रा भक्ति दुर्गतिमार्ग की यात्रा है। अब बाप कहते हैं मनमनाभव। मामेकम् याद करो तो तुम्हारे पाप विनाश हों और तुम अमरपुरी में चले जाओ। अमरपुरी क्या है, मृत्युलोक क्या है यह किसी को भी पता नहीं है। तो उनको सावधान करना पड़े। पर्चे ऐसे बांटने चाहिए जो कि वो मनुष्य समझ जावें कि यह तो भक्तिमार्ग की यात्रा है। और यह है ज्ञान की सच्ची यात्रा। अमरनाथ बाप कहते हैं कि तुम सभी पार्वतियां हो। अभी तुम मामेकम् याद करो तो तुम अमरपुरी में चले जावेंगे और तुम्हारे पाप नाश हो जावेंगे। इस यात्रा करने पर तुम्हारे पाप तो नाश होते नहीं हैं। यह है भक्तिमार्ग की यात्रायें। अब बाबा डायरैक्शन देते हैं पहले से ही अच्छी रीति मैटर बनाकर फिर बाबा के पास भेज देते तो फिर बाबा.....करेंगे। ऐसे नहीं पिछाड़ी समय जल्दी2 में बनवा लेवें। बाप तो डायरैक्शन ही देंगे ना। एक तो बाबा ने कहा कि नाटक बनाने वाले बाम्बे में बहुत अच्छे हैं। कोशिश करके उनको पकड़ना चाहिए। यह तो धर्माउ काम है। कोई धंधा आदि तो हमको करना नहीं है। बच्चों से यह प्रश्न भी पूछते हैं कि खर्चा आदि कैसे चलता है?परंतु ऐसा कोई समझदार नहीं लिखते हैं कि हम रेस्पांस करते हैं कि हम ब्रह्मा की औलाद ब्राह्मण है। तो हम ही तो अपने लिए खर्चा करेंगे ना। राजाई भी श्रीमत पर हम स्थापन कर रहे हैं। सो भी अपने लिए। राज्य भी हम ही करेंगे ना। शिवबाबा तो अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। जिससे ही हम राजाओं का राजा बनते हैं। बच्चे जो पढ़ेंगे वो ही .....करेंगे ना। समझाना चाहिए कि हम अपना ही खर्चा करते हैं हमको भिक्षा वा चंदा आदि नहीं लेते हैं ;परंतु बच्चों में किसी को समझाने की भी अक्ल नहीं हैं। सिर्फ लिख देते हैं कि यह2 पूछते हैं। इसलिए ही हमने कहा था जो2 सारे दिन में सर्विस करते हो, जो2 कोई पूछते हैं इस पर यह समझाया तो इस पर भी करैक्शन हो जावेंगे कि ऐसे2 समझाना चाहिए था। जो सर्विस होती है तो उसकी पीठ होनी चाहिए ना। क्या समझाया, क्या समझाना है उसकी भी पीठ होनी चाहिए। बाकी आते तो ढेर हैं फिर वो सब प्रजा बनते हैं। उंच पद प्राप्त करने वाले बहुत थोड़े हैं। राजायें थोड़े होते हैं। साहुकार भी थोड़े। बाकी गरीब बहुत होते हैं। यहां भी ऐसे हैं तो नई दुनियां में भी ऐसे ही होता है। राजाई स्थापन होती है तो उसमें तो नम्बरवार चाहिए ना। बाप आकर राजयोग सिखाकर आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं। दैवी राजधानी थी अभी नहीं है। बाप कहते हैं मैं फिर स्थापना करता हूँ। तो किसी को समझाने के लिए चित्र भी ऐसे ही होने चाहिए। बाबा की मुरली सुनेंगे तो पहले से ही खयाल करना चाहिए। पहले से ही छपाने से करैक्शन होगी। दिन–प्रतिदिन करैक्शन तो होती ही रहती है ना। तुम अपनी अवस्था को भी देखते रहो कि कितनी करैक्ट होती जाती है। बाप आकर गंदगी से निकालते हैं। जितना जो बहुतों को निकालने की सर्विस करेंगे वो उतना उंच पद पावेंगे। तुम बच्चों को तो एकदम

खीर खंड होकर रहना चाहिए। सतयुग से भी यहां तुमको बाप उंचा बनाते है। बाप ईश्वर पढ़ाते है तो उनको अपनी पढ़ाई जलवा दिखाना चाहिए। तो ही तो बाप भी फिर कुर्बान जावेगा। दिल में आना चाहिए बस अभी तो हम भारत को स्वर्ग बनाने का ही धंधा करेंगे। यह झाड़ लगाना करना तो करते ही रहेंगे। पहले अपनी उन्नति का तो करें। है बहुत सहज। मैं सब कुछ कर सकता हूँ। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए राजाई पद पाना है। इसलिए ही रोज अपना पोतामेल निकालो। सारे दिन का फायदा और नुकसान निकालो। पोतामेल नहीं निकालेंगे तो सुधरना मुश्किल है। बाप का कहना मानते (नहीं) हैं। रोज देखना चाहिए कि किसको हमने दुःख तो नहीं दिया है। पद बहुत उंचा है। अथाह कमाई है नहीं तो फिर रोना पड़ेगा। रेस होती है ना। तो उसमें कोई तो लाखों कमा लेते हैं। कोई तो फिर कंगाल। तुम्हारी है इश्वरीय रेस। इसमें तो कोई दौड़ी आदि भी नहीं पहननी है। सिर्फ बुद्धि से प्योर बाप को याद करना है। कुछ भी भूल हो तो झट सुनाना चाहिए बाबा हमसे यह भूल हुई। कर्मइन्द्रियों से यह भूल की। बाप कहते हैं राइट—रांग सोचना की बुद्धि मिली हुई है तो अब रांग काम नहीं करना है। रांग काम कर दिया तो बाबा तो पनाह वा क्षमा नहीं करते हैं ;क्योंकि बाप यहां बैठा हुआ है सुनने के लिए। मेरे को तो यह कान है ना। सुन सकता हूँ। जो भी बुरा काम हो जावे तो फौरन बाबा को लिखो वा बताओ कि यह बाबा बुरा काम हो गया तो तुम्हारा जिससे कि आधा माफ हो जावे। ऐसे नहीं कि मैं कृपा करुंगा। क्षमा वा कृपा पाई की भी नहीं होगी। सबको अपने को सुधारना है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे। .....का भी योगबल से कटता जावेगा। बाप का बनकर फिर बाप की निंदा नहीं कराओ। सतगुरू का निंदक ठौर ना पावे..... .....ठौर तुमको मिलती है बहुत उंची। दूसरे गुरुओं के पास कोई राजाई की ठौर नहीं मिलती है। यहां तो तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट है। भक्तिमार्ग में एम आब्जेक्ट होती नहीं है। अगर होती भी है तो अल्पकाल के लिए। कई तो 21जन्मों का सुख कहां अल्पकाल का सुख। ऐसे नहीं कि धन से सिर्फ सुख होता है। अच्छा, समझो कोई ने हास्पिटल बनाई तो वो दूसरे जन्म में निरोगी होगा। ऐसे तो नहीं कि पढ़ाई जास्ती मिलेगी। धन भी जास्ती मिलेगा। इसके लिए तो फिर सब कुछ हो। कोई सिर्फ धर्मशाला बनाते हैं तो दूसरे जन्म में सिर्फ महल मिलेगा। ऐसे नहीं कि तन्दरुस्त भी रहेगा। नहीं। तो बाप कितनी बातें समझाते हैं। कोई तो अच्छी रीति समझकर समझाते हैं,कोई तो समझते ही नहीं हैं। तो रोज पोतामेल निकालो कि आज सारे दिन में क्या किया। इस में ठगा। तो बाबा राय देंगे। तो अच्छा, यह ठगी करते हो तो यह भी करना पड़ेगा। ठगी बिना तो शरीर निर्वाह चल नहीं सकता। व्यापारी लोग तो कितनी ठगी करते हैं। फिर जब पकड़े जाते हैं तो मार2 के हड्डी तोड़ देते हैं। बहुत गंदी दुनियां है। तुम जानते हो हम तो अब स्वर्ग में जाते हैं। बच्चों को खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। हम बूढ़ा हूँ। जानता हूँ कि यह शरीर छोड़कर जाकर हम प्रिंस बनने वाला हूँ। तुम भी पढ़ते हो तो क्यों नहीं खुशी का पारा चढ़ना चाहिए ;परंतु बाप को याद ही नहीं करते हैं। बाप तो कितना.... समझाते हैं। वो इंगलिश आदि पढ़ने में माथा कितना गर्म होता है। बहुत डिफिकल्टी होती है। इस पढ़ाई से तो माथा ही शीतल हो जाता है। तुम सिर्फ बाप को ही याद करते रहो तो एकदम शीतल अंग हो जावेंगे। शरीर तो तुमको है ही ना। शिवबाबा को तो शरीर है ना। राइट बुद्धि मिली है तो अब रांग काम नहीं करना चाहिए। अंग है श्रीकृष्ण को। उनके तो अंग शीतल है ही। इसलिए ही उनका नाम रख दिया है। अब उनका संग कैसे हो?वो तो होता है ही सतयुग में। उनका भी ऐसा शीतल अंग किसने बनाया?यह अभी तुम समझते हो। बहुत जन्मों के भी अंत के जन्म में बाप बैठकर उनके अंग शीतल बनाते हैं। तो तुम बच्चों को भी उतनी ही धारणा करनी चाहिए। लड़ना—झगड़ना बिल्कुल नहीं चाहिए। सच नहीं सुनाते हैं और ही झूठ बोलते हैं तो और ही सत्यानाश हो जाती है। झूठ बोलना नहीं चाहिए। सच नहीं सुनाते हैं और ही झूठ बोलते हैं तो और ही सत्यानाश हो जाती है। झूठ बोलना तो ..... ओम।